

पर्युषण पर्व का छठा दिन

इष्ट के स्मरण से मिलता है समाधान : आचार्य महाश्रमण 'महात्मा महाप्रज्ञ' पुस्तक का नवीन संस्करण विमोचित

सरदारशहर 10 सितम्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने पर्युषण पर्व के छठे दिन 'जप दिवस' पर भगवान महावीर के पूर्व भवों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर अपने पूर्व जन्मों में अनेक कष्टों को सहन किया और साधना के द्वारा विशुद्धता की ओर बढ़ते रहे। इस मौके पर आचार्य महाश्रमण ने स्वयं द्वारा लिखित 'महात्मा महाप्रज्ञ' पुस्तक के नवीन संशोधित संस्करण का विमोचन किया। इस पुस्तक में आचार्य महाप्रज्ञ के आदि से अंत तक के जीवन वृत्त को सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। कृति की प्रथम प्रति बिमल कुमार नाहटा ने आचार्य महाश्रमण को विमोचन हेतु समर्पित की।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि पर्युषण पर्व धर्मासाधना का पर्व है। आत्म साधना का पर्व है। धार्मिक व्यक्ति की चाह होती है कि वह अनन्त काल से संसार भ्रमण कर रहा है, इस परंपरा से मुक्त हो जाऊं आत्म तत्व को प्राप्त कर लूं। जप की साधना मन की शुद्धि के लिए की जाती है तो वह आत्मसाक्षात्कार कर सकता है। उन्होंने जप करने के अनेक उद्देश्यों की चर्चा करते हुए कहा कि शारीरिक, मानसिक, भावात्मक कष्टों से छूटकारा पाने के लिए जप का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने कहा कि इष्ट का स्मरण करने से समाधान मिलता है। सुख-दुःख प्रत्येक स्थिति में मंत्र का प्रयोग करते रहना चाहिए।

मुज्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि जीवन को शांति से चलाने के लिए मंत्र का प्रयोग उपयोगी है। साध्वी शुभ्रयशा ने भगवान पार्श्वनाथ के जीवन वृत्त पर अपने विचार रखे। बाल मुनि अनुशासन कुमार ने गीत के द्वारा जप की महत्ता बताई। साध्वी चन्द्रिकाश्री ने मंगलाचरण किया।

राजपाल ने प्रकाशित की आचार्य महाप्रज्ञ की कृति

राजपाल प्रकाशन ने राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ की बहुचर्चित कृति 'सुबह का चिंतन' को हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किया है। आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तकों की बढ़ती मांग को देखते हुए हार्पर कॉलिन्स, पेंगविन, डायमण्ड के बाद राजपाल प्रकाशन ने भी आचार्य महाप्रज्ञ की कृतियों के प्रकाशन की शुरूआत की है। पुस्तक की सज़ादिका मुज़य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने प्रथम प्रति आचार्य महाश्रमण को समर्पित करते हुए कहा कि इस पुस्तक में प्रतिदिन के विचारों को आचार्य महाप्रज्ञ ने स्वयं लिखाया है। ये छोटे-छोटे विचार पाठक को बांधे रखते हैं और जीवन में परिवर्तन लाने का मानस बनाते हैं। ज्ञातव्य है कि पूर्व में यह कृति जैन विश्व भारती लाडनू के द्वारा प्रकाशित थी। इस कृति के अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, पाठकों में इस पुस्तक की मांग को देखते हुए राजपाल प्रकाशन ने नये रूप में प्रस्तुत किया है।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)